**AMOGHVARTA**

**ISSN : 2583-3189**

# लालित्य ललित के लेखन में स्त्री विमर्श : एक अध्ययन

**ORIGINAL ARTICLE**

**Author**
**लालजी**
जीवाजी विश्वविद्यालय
ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

## शोध सार

*आधुनिकता की होड़ में मानवीय मूल्यों की अवहेलना समाज, संस्कृति और राष्ट्रीयता के लिए अच्छे संकेत नही है। लालित्य ललित अपने लेखन के माध्यम से नारी को अतिआधुनिकता के दुष्परिणामों से चेताते है। स्त्री की स्वतंत्रता उसकी सामाजिकता की सीमा में रहते हुए आवश्यक है। यदि यही स्वतंत्रता जब स्वच्छंदता मे परिवर्तित होने लगे तो वह समाज को, परिवार को विखंडित करने वाली होती है। आज सोशल मीडिया पर सक्रिय रहने वाले लोगों के वास्तविक चिंतन को जानकर तो यह कतई नहीं लगता कि लाइक्स और कमेंट देकर वे किसी अन्य महिला में मातृत्व या बहन के प्रेम की अभिलाषा लेकर बैठे हो। यही कारण है कि लालित्य ललित अपने निबंधों, व्यंग्यों एवं काव्य के माध्यम से समाज को चिंतन की ओर प्रेरित करते हैं। लालित्य ने जहां एक ओर अपनी रचनाओं में स्त्रियों की दशा का वर्णन किया है वहीं दूसरी ओर उन्हें सावधान करने की कोशिश भी की है।*

## मुख्य शब्द

*लालित्य ललित, स्त्री विमर्श.*

## प्रस्तावना

आज के परिप्रेक्ष्य में देखा जाय तो साहित्यकारों की बाढ़ सी दिखाई दे रही है किन्तु समाज के यथार्थ को सबके समक्ष लाने का साहस कुछ ही साहित्यकारों में है। उन्हीं में से एक हैं– लालित्य ललित जो अपने जीवन को साहित्य की सेवा में समर्पित कर रहे हैं। उनके लेखन और चिंतन का क्षेत्र व्यापक है। वे किसी एक विशेष क्षेत्र को ही अपने लेखन का विषय नहीं बनाते, वे नारी जागरण, समाज, धर्म, राजनीति, परिवार एवं वर्तमान लेखन सहित विविध विषयों की विसंगतियों को संस्पर्श करते हैं। लालित्य ललित अपने आस–पास के परिवेश से उन छोटी से छोटी विसंगतियों को सबके समक्ष लाने का प्रयास करते हैं जिन्हें सामान्य व्यक्ति यह कहकर उपेक्षा करता है कि ऐसा तो होता ही रहता है। उनका यह स्पष्ट मानना है कि समाज में व्याप्त भ्रष्टचार, अनाचार और अनैतिकता के लिए जितनी जिम्मेदारी शासन और प्रशासन की है उतना ही उत्तरदायित्व आम जन मानस का भी है। इसे केवल सरकार में कमियाँ निकालकर या उसकी आलोचना करके दूर नहीं किया जा सकता, आम आदमी को भी कुछ अपने उत्तरादायित्वों को समझना होगा।

भारतीय प्राचीन साहित्य में स्त्री का स्थान और उसकी चेतना का स्वरूप अपने शीर्ष पर था। मध्यकाल आते–आते स्त्री विमर्श के मानको में ह्रास प्रारंभ हुआ, जिसे साहित्य में उसी दृष्टि से विश्लेषित करने की परम्परा का जन्म हुआ। देश मे जैसे–जैसे भारतीय संस्कृति का पतन होता गया, वैसे–वैसे स्त्री की दिशा और दशा में पतन

का संकेत मिलता है। रीतिकालीन साहित्य इसका बड़ा उदाहरण है। वात्स्यायन के कामसूत्र के सैद्धांतिक यौनिकता–विमर्श के बाद पहली बार रीतिकालीन साहित्य में इस विमर्श को प्रस्तुत विश्लेषित किया गया। तत्कालीन समाज में विशेष रूप से बौद्धिक वर्ग मे चुप्पी और सहमति के साथ ही इसे पोषित पल्लवित किया गया। आजादी के बाद देश में पुनः अपनी संस्कृति पर गर्व करने का वातावरण बना तो पुनः स्त्री विमर्श को नये रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास हुआ। इसमें स्त्री के मानवीय दृष्टिकोण भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के साहित्य में देखा जा सकता है। मैथिलीशरण गुप्त द्वारा स्त्री की दयनीय दशा को देखते हुए पुनः वैदिक कालीन स्त्री के स्वरूप व सम्मान को साहित्य में स्थापित करने की पूर्ण कल्पना हम देख सकते है। वर्तमान राजनीतिक प्रयासो और आधुनिकता बोध ने स्त्री को स्वतंत्रता के शीर्ष की ओर ले जाने का प्रयत्न किया है। आज स्त्रियाँ जीवन के हर क्षेत्र में प्रगतिशील बन कर समाज के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रही है, किन्तु इस आधुनिकता ने स्त्री को जिस खाँचे में ढालने की चेष्टा की है उसके परिणामस्वरूप भारतीय सांस्कृतिक ताना–बाना छिन्न–भिन्न होने लगा है। संविधान स्त्री के अधिकार को पारिवारिक–सामाजिक सीमाओं के अन्दर रहकर पोषित करने का प्रयत्न करता रहा, लेकिन स्त्रियाँ इस सीमा से बाहर रहकर स्वतंत्रता को स्वच्छंदता का पर्याय मानने की भूल करने लगी, जिससे आज अधिकार और कर्तव्य के बीच सांमजस्य का बंधन क्षीण होने लगा है।

लालित्य ललित का व्यंग्य साहित्य स्त्री विमर्श को बृहत सन्दर्भों में संस्पर्श करता है। वे अपने साहित्य में जहाँ एक ओर स्त्री के मातृत्व को सांस्कृतिक चेतना के साथ सहेजते हैं, वहीं आधुनिकता को कोरे और अधकचरे विश्लेषण के प्रभाव में बहती स्त्रियों पर अपने व्यंग्य के माध्यम से चेताते भी हैं। लालित्य ललित का स्त्री चिंतन व्यवहारिकता और सामाजिकता से प्रभावित है। उनके समग्र चिंतन का मूल्यांकन करते हुए प्रेम जन्मेजय जी का यह वक्तव्य बहुत ही महत्वपूर्ण है, वे लिखते हैं –''ललित की युवा दृष्टि जहाँ मॉल, लड़कियों और बाजार के उत्पादों पर रहती है और आधुनिक होते जीवन की विसंगतियों को रेखांकित करती है, वहीं वह कुछ सार्थक और मानवीय संबंधों से युक्त मूल्यों के प्रतीकों को भी तलाशती है। लालित्य के प्रिय पात्र पांडेय जी पिज्जा, बर्गर आदि के स्थान पर समोसे और जलेबियों का नैसर्गिक रस लेते अधिक दृष्टिगत होते हैं। ललित की रचनाओं में पांडेय जी के सक्रिय होते ही एक अलग तरह की गंध रचना में आ जाती है। पांडेय जी की सोच के माध्यम से वे ओढ़ी हुई आधुनिकता पर सार्थक प्रहार करते हैं। वे अपनी ही पीढ़ी से प्रश्न करते हैं।''[1]

इसमें संदेह नहीं कुछ पिछड़े समुदायों, आदिवासियो में महिलाएँ भले ही पुरूषों के पीछे चलने को मजबूर हों, किन्तु हमें आज महिलाओं की बड़ी आबादी समाज से आगे निकलने की चेष्टा करती हुई मिल जाएँगी।

लालित्य ललित महिला को आधुनिकता के कोरे दिखावे से दूर रहने की ओर संकेत करते हैं। हमारी भारतीय संस्कृति में स्त्री शिक्षा, और उसके आवश्यक विकास के लिए बहुत सारे विकल्पों पर प्रयास किया जाता रहा, किन्तु दुर्भाग्यवश स्त्री के प्रति समय, और परिस्थिति के अनुसार लोगों ने अपने विचार जोड़कर धर्म के साथ परिभाषित करने की चेष्टा की। इसके परिणाम स्वरूप धर्म को स्त्री के प्रतिकूल परिभाषित करने की कुचेष्टा भी की गई। इससे भी स्त्री के प्रति चिंतन में बदलाव समय के साथ नये–नये ढंग से प्रस्तुत किए जाते रहे है। लालित्य ललित का स्त्री विमर्श आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में अन्य साहित्यकारों से भिन्न है। वे न तो स्त्री के लिए गुलामी की स्थिति को स्वीकार करते हैं, और न ही अति आधुनिकता की तलाश में स्त्री की नग्नता। वे अपने साहित्य में कई स्थानों पर सोशल मीडिया में खोती मातृत्व सामर्थ के निचले स्तर पर पहुँच रही है। वे अपनी कविता इक्कीसवीं सदी की लड़की में लिखते हैं:

''कुछ नया सोचती हैं
कुछ हटकर
कुछ अलग तरह का
वह चपांतियाँ बाने में यकीन नहीं रखती
वह नई तकनीकी से

मँगा लेती है सामान ऑर्डर कर
उसे नहीं भाता किचन में असमय
घुसे रहना
उसे पसन्द है?
हर समय नेट पर
अपनी मौजूदगी बनाए रखना
लाइक्स और कमेंट्स के
आधार पर टिकी यह पीढ़ी
कुछ न कुछ धमाल करने का मन बनाए रखती है
वह शॉपिंग मॉल
डिस्को, पब में जाना
अपना मौलिक
अधिकार मानती है।''[2]

लेखक मेट्रो का पर्याप्त उपयोग करता है। इस मेट्रो में सवारियों का रेला – ईयर फोन, आपस मे चोंच से चोंच मिलाकर बात करते हुए लड़के–लड़कियाँ। ये सब दिल्ली मेट्रो की आधुनिक होती पीढ़ी के प्रतीकों को व्यंग्यकार ने बड़े मासूमियत के साथ अपने साहित्य में उकेरा है। लालित्य ललित ने अपने साहित्य में कई स्थानों पर कविता के रूप में बेशर्म होते लड़कियों और लड़को को कई बार चेताया है। आज हम देखे कि मेट्रो हों, पार्क हो, कॉलेज का कोई रिक्त परिसर हो अथवा कहीं और कोई स्थान इस आधुनिक होती पीढ़ी को इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता। वे तो सात्विकभाव से एक–दूसरे का चुम्बन करें, आलिंगन करें, इसमें अन्य किसी को कुछ भी कहने का अधिकार नहीं है। आधुनिकता के सोपानों को स्पर्श करते हुऐ जो पीढ़ी आध्यात्मिकता के चरम पर पहुँच चुकी है, क्योंकि किसी का माँ–बाप इसे बेशर्मी शब्द या कोई इसके समानांतर अन्य शब्दों से सम्बोधित नहीं कर सकते, ऐसा करके या अपने सामने अपनी आधुनिक होती संतान के अत्याधुनिकता वाले कार्यक्रमों को देखकर भी मौन रहना होगा। यदि वे कुछ भी कहने डाँटने की धृष्टता करेंगे तो उन्हें या तो संतान रहित होना होगा अथवा कोर्ट मैरिज कर नवदंपति से जीवन भर के सहज संबंधों से दूर रहना पड़ेगा। लालित्य ललित का चिंतन इस अति आधुनिकता की ओर है। वे गद्य और पद्य दोनों में व्यंग्य पूर्ण तरीके से यथार्थ को सबके सम्मुख लाने में बिल्कुल भी संकोच नहीं करते, वें लिखते हैं –''मेट्रो में चलिए, वहां यात्रियों की रोमांटिक या ओछी हरकतें देखिए और उस समाज का हिस्सा बन जाइए। लीजिए मेट्रो में पांडेय जी ने क्या देखा! वह इस बहाने आपकी नजरः–

मेट्रो मे तीन लड़कियाँ। लालित्य ललित
भीड में से तीन लड़कियों का संवाद
एक पतले मुँह की
यार मीणकर्णिका शानदा बनाई है
दूसरीः कंगना की फिगर बड़ी मस्त है
तीसरीः अपने चलना भी मुसीबत है
भला हो ई श्रीधरन का
जिसने मेट्रो बना दी
भला हुआ
लड़कियों का और थकेलो का
यार तेरा ट्यूशन था

हाँ जी, है
आज पापा को कह दिया
बिठाकर उनका कहना कि पहले चेप्टर याद करो
और तू बता
तेरा क्या!
यार पुनीत को मम्मी ने रिजेक्ट कर दिया
वह किसी और फेंड की लिस्ट में था
किसी बंदी के साथ
इसी बात पर!
हाँ! यार मम्मी तो कुछ समझती हीं नहीं
आजकल तो शगल है
ये सब!''[3]

स्त्री चिंतन में विमर्श के नये–नये पैमाने और तर्क गोल भले ही हो जाए, किन्तु स्त्री चिंतन समाज के समन्वय, परिवारिक सामंजस्य के साथ ही प्रगतिशील और सार्थक कहलाएगा। केवल स्त्री विमर्श के नाम पर उसे अलग खाँचे स्थापित करने की प्रवृत्ति न तो स्त्री के लिए आयुक्त होगी और न ही परिवार समाज के लिए उचित। लालित्य ललित का स्त्री चिंतन नये सन्दर्भों और नए विमर्शों का जन्म देता है। जिसे संविधान अधिकार कहता रहा, उसे समाज ने स्वतंत्रता के साथ खड़ा कर दिया। समाज जिस स्त्री चिंतन में उसकी आजादी की बात करता रहा, इसे स्त्रियों में स्वछंदता के रूप में स्थापित होते बहुत देर नहीं लगी। आज स्त्रियों में अधिकार के नाम पर ली गई स्वतंत्रता, स्वछंदता से आधुनिकता के चंगुल में जकड़ ली गई। इसमें कुछ जीने के लिए उत्सुक है, कुछ देखा–देखी आधुनिक बनने की होड़ में मजबूर हैं, और कुछ इस आधुनिकता के नाम पर अपना व्यवसाय खड़ा करने की ओर आगे बढ़ रहे हैं। लालित्य ललित स्त्रियों को इस प्रकार के आधुनिकता के दिखावे से बचना होगा। मेट्रो में युवक–युवतियों के आधुनिक दिखने वाले दावों पर यथार्थ चित्रण करते हुए लालित्य ललित लिखते हैः

''अगला स्टेशन प्रगति मैदान
कई जोड़े हैं,
वे आलिंगनबद्ध है,
उन्हें कुछ भी सुनना पसन्द नहीं,
न लोगों की घुसर–पुसुर,
न मेट्रो की अनाउंसमेंट उन्हें सुनाई दे रही है,
उनके होंठ एक दूसरे के होंठ में हैं,
उनका गहराता स्पंदन उनके समय को और नशीला बना रहा हैं,
दुनिया उनकी नजर में मौजूद नहीं,
वे और उनका प्रेमी इस समय केन्द्र भूमिका में,
दूसरा उन्हें कोई भाता नहीं।''[4]

लालित्य ललित अपने लेखन में बाजारवाद, अतिआधुनिकता के भ्रामक जाल से निरन्तर समाज को चेताते रहते है। वे बार–बार यह बताने की चेष्टा करते हैं कि अपनी सांस्कृतिक विरासत को त्यागने का दुष्परिणाम केवल और केवल समाज को मानवीय मूल्यो के ह्रास के रूप में सामने आएगा। यदि समय रहते इस ओर समाज का ध्यान नही गया, तो वह दिन दूर नहीं जब पाश्चात्य जगत में व्याप्त एकाकी, अविश्वास और घुटन से भरी जिन्दगी से सामना करना पड़ेगा। वे अपने लेखन में भूमंडलीकरण, बाजारीकरण के दुष्परिणामों पर यत्र–तंत्र चिंता करते नजर

आते हैं, आपके व्यंग्य हमें आगाह करते हैं कि अब बस बहुत हुआ, अपनी जड़ों की ओर चिंतन के लिए समय निकालो। एक जगह वे लिखते हैं –''बाजारवाद की इस दौड़ में हम नैतिकता, मानवता और परम्परा को कितना पीछे छोड़ आए है। अगर कुछ बचा है तो वह बस दिखावा भर रह गया है। आर्थिक उदारीकरण ने जहाँ एक ओर बाजारवादी व्यवस्था को ताकत दी हैं, वही पारिवारिक संबंधों को अनुदार, आत्मकेन्द्रित और मतलबी बना दिया है।''

इस तथ्य को जानने–समझने के लिए हम अपने समाज में बढ़ती जा रही विसंगति पर दृष्टि डालनी होगी। यदि अतिआधुनिकता के प्रभाव में आकर लड़के–लड़कियाँ इस शगल को अपनाती रहेंगी तो सभी आदर्श, परिवार, प्रतिष्ठा और सामाजिक संरचना का ताना–बाना छिन्न–भिन्न होने में अधिक समय नहीं लगेगा।

आधुनिकता की होड़ में मानवीय मूल्यों की अवहेलना समाज, संस्कृति और राष्ट्रीयता के लिए अच्छे संकेत नही है। लालित्य ललित अपने लेखन के माध्यम से नारी को अतिआधुनिकता के दुष्परिणामों से चेताते है। स्त्री की स्वतंत्रता उसकी सामाजिकता की सीमा में रहते हुए आवश्यक है। यदि यही स्वतंता जब स्वच्छंदता मे परिवर्तित होने लगे तो वह समाज को, परिवार को विखंडित करने वाली होती है। आज सोशल मीडिया पर सक्रिय रहने वाले लोगों के वास्तविक चिंतन को जानकर तो यह कतई नहीं लगता कि लाइक्स और कमेंट देकर वे किसी अन्य महिला में मातृत्व या बहन के प्रेम की अभिलाषा लेकर बैठे हो। यही कारण है कि लालित्य ललित अपने निबंधों, व्यंग्यों एवं काव्य के माध्यम से समाज को चिंतन की ओर प्रेरित करते हैं।

## निष्कर्ष

फैशन, फिल्म जगत और बाजारवाद ने स्त्री को भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों से अलग–अलग कर अंग प्रदर्शन की ओर आकृष्ट किया है, इस यथार्थ की अतिशीघ्र ही समझना होगा। स्त्री के सम्मान को लेकर चिंतित व्यंग्यकार लालित्य ललित जितना उत्तरदायी पुरूषों को मानते हैं, उतना ही वे स्त्री समाज को भी दोषी मानते हैं। लालित्य ललित के व्यग्यों में जहाँ एक ओर स्त्रियों के मान–सम्मान की रक्षा पर विमर्श है वहीं दूसरी ओर स्वयं को वस्तु के रूप में प्रस्तुत करने वाली सोच से स्त्रियों को सावधान भी किया गया है। आज बाजारीकरण की व्यापारिक मानसिकता ने व्यक्ति को भी वस्तु के रूप में मानने और जानने का दुःसाहस किया है। केवल व्यापार को सफल बनाने के लिए स्त्री को हथियार के रूप में स्थापित करने वाली उपभोक्ता संस्कृति से लालित्य ललित ने समाज को चेताया है। धन की खनक से मानवता की पुकार मन्द होती जा रही है।

## संदर्भ सूची

1. पांडेय जी के शगूफे, लेखक लालित्य ललित, पृ. 183।
2. मेरी 51 कवितायें – 10, लालित्य ललित पृ. – 100।
3. पांडेय जी बोल रहे हैं, लालित्य ललित, पृ.– 116–117।
4. मेरी इक्यावन कवितायें – 1, लालित्य ललित पृष्ठ–94।

––==00==––